राष्ट्रीय सागर | झारखण्ड | बुधवार | रांची, 12 नवंबर 2014

बांधों के उस पार क्यों ठहर गया है जीवन?

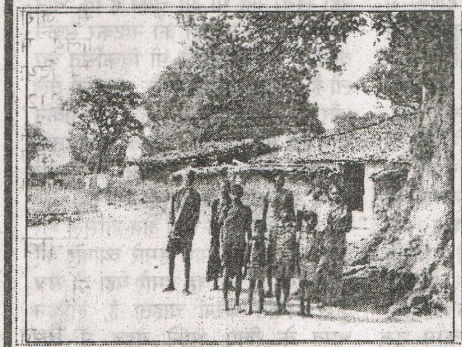

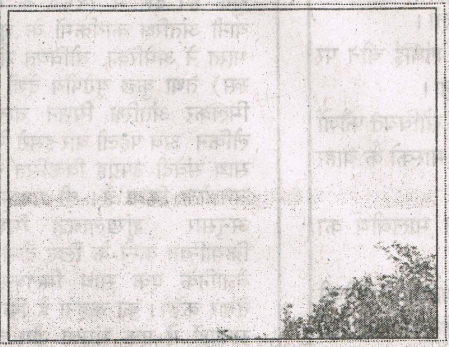

जसिन्ता केरकेट्टा

झारखंड के सिमडेगा जिले में तीन डैम हैं, लेकिन विडंबना यह है कि आज जिन डैम से शहरों को पर्याप्त पानी मिलता है, वहीं विस्थापित हुए लोगों को ही इसका पानी उपलब्ध नहीं। वे आज भी अंधेरे में जीने को मजबूर हैं। जमीनें कौड़ियों के भाव ली गयीं, इसके बावजूद आज तक कई विस्थापितों को मुआवजा नहीं मिला है। आजीविका के संसाधनों की कमी के कारण युवा दिहाड़ी मजदूर बनने या शहरों को पलायन के लिए अभिशप्त हैं। डैम के पानी से जहां शहर में जीवन-प्रवाह हो रहा वहीं बांध के उस पार लोगों का जीवन रूक सा गया है। झारखंड के सिमडेगा जिले में तीन डैम हैं, जिनमें केलाघाघ, कोबांग और कोनबेगी डैम शामिल हैं। केलाघाघ डैम का निर्माण चिंदा नदी पर 1974-75 में हुआ था। इसकी कुल जल संचयन क्षमता 994.58 हे.मी. है। गहराई 390.24 मीटर और डूब क्षेत्र 3809.75 हैक्टेयर है। इस डैम के लिए कई लोगों ने अपनी जमीनें दी लेकिन यह विडंबना ही है कि आज जिस केलाघाघ डैम से सिमडेगा के मुख्य शहर को पर्याप्त पानी मिलता है, वहीं विस्थापित हुए लोगों को इसका पानी उपलब्ध नहीं। दूसरी ओर, सिंचाई की मुख्य नहर में पानी तो है लेकिन इससे निकलने वाली नहरों की शाखाओं से पानी नहीं गुजरता। मुख्य नहर भी कुछ दूर आगे जाकर पतले नाले में तब्दील हो जाता है। जबकि एक नहर की लंबाई 13.78 किलोमीटर, वहीं दूसरे की 13.56 किलोमीटर है। इससे शाखा नहरों के माध्यम से पानी दूर-दराज के गांवों तक नहीं पहुंच पाता। आस-पास के गांवों में छोटी शाखा नहरें कब की सूख कर मृत पड़ी हैं। डैम बनने के बाद इन छोटी शाखा नहरों में भी पानी बहा करता था और गांवों में धान व गेहूं की फसलें लहलहाती थी, लेकिन अब खेत कोड़ने के बाद किसान खेत तक पानी पहुंचने का इंतजार करते नजर आते हैं।

दिहाड़ी मजदूर बनने को जन्म ले रही पीढ़ियां : केलाघाघ डैम में जलमग्न हुए गांव के कुछ लोगों को पूर्ववर्ती विधायक थियोडोर किड़ो ने 15-15 डिसमिल जमीन उपलब्ध करायी थी। वहां लोगों ने जंगल साफकर घर बसाया। आज यह गांव केलाघाघ बेड़ाटोली कहलाता है। इस गांव में आज 20-25 घर हैं। गांव की कुंवारी लुगुन बताती हैं कि डेम बनने से पहले उनकी आजीविका का मुख्य साधन कृषि था। पर डैम बनने और अपनी जमीन से उजड़ने के बाद वे पूर्ण रूप से दिहाड़ी मजदूर बन गए हैं। गांव के घरों का कोई ऐसा न होगा जो दिहाड़ी मजदूरी न करता हो। इसी गांव की नमलेन लुगुन कहती हैं कि गांव के बेरोज़गार युवा परिवार चलाने के लिए पढ़ाई छोड़ मजदूरी कर रहे हैं। जो बच्चे गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ रहे हैं, वे भी पांचवी के बाद पढ़ाई छोड़ मजदूरी करने लगते हैं। गांव के लोग डैम में मछली मारते हैं और उसे बेचकर चावल-दाल खरीदते हैं। आजीविका के साधनों में मछली मारना और मजदूरी करना भर रह गया है। इससे भी तीन वक्त के खाने का जुगाड़ नहीं हो पाता। दो जून का खाना ही नसीब होता है। गांव में दो चपाकल हैं, इसमें भी एक खराब पड़ा है। दूसरे से गंदा पानी निकलता है, वे जिसे छानकर पीते हैं। गांव की सबसे बड़ी समस्या पीने के साफ पानी की व्यवस्था की है। सिमडेगा के बुधराटोली में रहने वाले फौज से सेवानिवृत लूथर केरकेट्टा डैम बनते समय की स्मृतियों को पुनः जीवित करते हुए बताते हैं कि उनकी पत्नी स्व. मैनी मरसा केरकेट्टा डैम बनने के दिनों में इसके विरोध में चल रहे आंदोलनों की अगुआ थी। इस क्रम में वह कई बार जेल भी गई। उन्होंने अपनी आंखों से देखा है कि लोगों को मुआवजे के तौर पर कौड़ी के भाव से कुछ पैसे दिये गये थे और उनसे कहा गया कि उन्हें यह राशि एडवांस के तौर पर दी जा रही है। शेष राशि बाद में दी जाएगी। आज तक वह राशि विस्थापितों को नहीं मिली है।

विस्थापितों के लिए नहीं है सप्लाई का पानी : विस्थापित गांव बिरनीबेड़ा में 200 की आबादी है। पहले गांव के लोगों के पास खेती के लिए बड़े-बड़े खेत थे। वे धान, और मुंगफली की खेती करते थे। मुख्यत: कृषि पर आश्रित थे। पर अब बचे-खुचे टांड़ वाली जमीन पर भी खेती करना मुश्किल हो गया है। यहां के युवा सिमडेगा शहर जाकर मज़दूरी करते हैं। गांव के इलियाजर डुंगडुंग ने बताया कि डैम के लिए उनकी एक एकड़ जमीन गई। अब शहर जाकर मजदूरी करते हैं। पूरे शहर को इसी डैम से सप्लाई का पानी मिलता है, लेकिन वह पानी विस्थापित गांवों तक नहीं पहुंचता। डैम के पानी से पूरा शहर लाभान्वित हो रहा है, शहर रौशन है, लेकिन विस्थापित गांवों तक अब भी बिज़ली नहीं पहुंची है। डैम से प्रभावित गांवों में बेड़ाटोली, कंदराडीपा, बिरनीबेड़ा, बोरपानी, सलडेगा, बुधराटोली, घोचोटोली, नयागमटोली, बड़ाबरपानी, जलडेगा, चिमटीटोला आदी शामिल हैं।

अगला अंक जारी

सीएसडीएस द्वारा प्रदत
इनक्लूसिव मीडिया यूएनडीपी
फेलोशिप के तहत रिपोर्टिंग